

मलिक काफूर: अलाउद्दीन खिलजी का प्रमुख सेनापति

मलिक काफूर (मृत्यु: 1316) अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल का एक अत्यंत प्रभावशाली सेनापति और दरबारी था। वह अपनी सैन्य कुशलता, रणनीतिक बुद्धिमत्ता और महत्वाकांक्षी स्वभाव के लिए जाना जाता है।

1. प्रारंभिक जीवन और गुलामी

मलिक काफूर मूल रूप से एक हिंदू था, संभवतः गुजरात या दक्षिण भारत का निवासी।

1299 में, जब अलाउद्दीन खिलजी की सेना ने गुजरात पर हमला किया, तब काफूर को बंदी बना लिया गया और दिल्ली लाया गया।

बाद में उसे इस्लाम कबूल कराया गया और वह अलाउद्दीन का विश्वासपात्र बन गया।

उसकी सुंदरता और बुद्धिमत्ता के कारण उसे "हजार दिनारी" भी कहा जाता था, क्योंकि उसे 1000 दीनार में खरीदा गया था।

2. अलाउद्दीन खिलजी के सेनापति के रूप में

जल्द ही काफूर ने अपनी काबिलियत साबित की और अलाउद्दीन का सबसे शक्तिशाली सेनापति बन गया।

उसे "नायब" (डिप्टी) और "मलिक" की उपाधि दी गई।

प्रमुख सैन्य अभियानों में भूमिका

(1) मंगोलों के खिलाफ युद्ध

मलिक काफूर ने कई बार मंगोलों के आक्रमण को रोका और उन्हें बुरी तरह हराया।

1305 में अमरोहा के युद्ध में उसने मंगोलों को निर्णायक रूप से पराजित किया।

(2) दक्षिण भारत (दक्कन) विजय अभियान

मलिक काफूर ने 1307-1312 के बीच दक्षिण भारत के कई राज्यों पर आक्रमण किए और वहां से अपार धन लूटकर दिल्ली लाया।

देवगिरी (1307, 1312): यादव राजा रामचंद्र को हराया।

वारंगल (1310): काकतीय वंश के राजा पृथ्वीराज को हराकर भारी धन लूटा।

होयसला साम्राज्य (1311): राजा वीर बल्लाल III को हराया।

पांड्य साम्राज्य (1311-12): मदुरै और रामेश्वरम तक हमला किया और धन व गहनों की भारी लूट की।

रामेश्वरम में उसने अलाउद्दीन खिलजी के नाम पर एक मस्जिद भी बनवाई।

3. अलाउद्दीन खिलजी की मृत्यु और सत्ता संघर्ष (1316)

1316 में अलाउद्दीन खिलजी की मृत्यु के बाद मलिक काफूर ने सत्ता हथियाने की कोशिश की।

उसने अलाउद्दीन के बेटों को नजरबंद कर दिया और खुद दिल्ली की सत्ता संभालने की कोशिश की।

लेकिन अन्य दरबारियों और सेना के विरोध के कारण उसे 35 दिन बाद मार दिया गया।

4. मलिक काफूर का महत्व

महान सैन्य रणनीतिकार – उसने दक्षिण भारत में पहली बार मुस्लिम आक्रमण को सफल बनाया।

दिल्ली सल्तनत का प्रभाव बढ़ाया – अलाउद्दीन खिलजी की सत्ता मजबूत करने में उसकी अहम भूमिका रही।

महत्वाकांक्षी लेकिन क्रूर – सत्ता पाने की लालसा में उसने खिलजी के परिवार को नजरबंद किया, लेकिन खुद भी मारा गया।

निष्कर्ष:

मलिक काफूर एक गुलाम से सेनापति और फिर राजनीतिक साजिशों का शिकार बनने वाला व्यक्ति था। उसकी जीवनगाथा महत्वाकांक्षा, युद्धकला और सत्ता संघर्ष से भरी हुई थी।